भगवत् कृपा

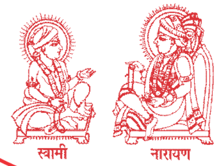

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 1	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
सोमवार, 26.1.98	जनवरी-1998	प्रति अंक : 5.00

3 फरवरी.........मंगलकारी दिन!

3 फरवरी यानि—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन......पूरे गुणातीत समाज के लिए अविस्मरणीय दिन ! क्योंकि इसी मंगलकारी दिन पर 1952 में गुरुहरि योगीजी महाराज ने 72 घंटे तक अक्षरधाम की समाधि का दर्शन करवाया और स्वयं पूरे के पूरे '**काकाजी**' में समा गये। एक समर्थ योगी ने अपने जैसे ही समर्थ योगी का निर्माण करके पूरे गुणातीत समाज को धन्य कर दिया। धन्यवाद ! धन्यवाद ! गुरुहरि योगीजी महाराज को और ब्रह्मधुरा संभालने वाले सर्व कल्याणकारी गुणों युक्त वारिसदार प.पू. काकाजी को....

3 फरवरी 1994 को दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा करके प.पू. गुरुजी ने इसे और भी ऐतिहासिक बना दिया और....इसी दिन जब 1997 में प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती मनाई तो सभी भक्तों के लिए चिरंजीव अविस्मरणीय स्मृति बन गई...

इन सभी स्मृतियों का खजाना लेकर फिर 3 फरवरी नज़दीक आ रही है। प.पू. काकाजी के बारे में लिखने के लिए तो लेखनी को सीमा नहीं मिलती.....पर, सच ! गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी के रूप में गुणातीत समाज को जो अनमोल भेंट दी....वह ऋण तो हम कभी चुका ही नहीं पायेंगे, पर इस ऋण को सैकण्ड-सैकण्ड यदि याद रखेंगे तो वह हमें हमारे सभी ऋणों से मुक्त करवा कर मुक्ति के द्वार की ओर अग्रसर करेगा....

प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन निमित्त भीतर से तो कई उद्‌गार निकलते हैं क्योंकि हम सभी ने प.पू. काकाजी के दर्शन किए, उनकी दिव्यता का, प्रभु की शक्ति का अनुभव किया ! पर शुरुआत से प.पू. काकाजी के जीवन में आए ज्वार-भाटे एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति का उनका अद्‌भुत समर्पण जिन-जिन्होंने अत्यधिक नज़दीक से निहारा है उन सभी के दिल के उद्‌गार उन्हीं की परावाणी में यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं....

✷......अक्षरपुरुषोत्तम के धारक योगी महाराज हैं, यह सबसे पहले काकाजी को 3 फरवरी को दर्शन कराया और काकाजी शूरवीरता से सिन्सीयरली लग पड़े। जोगी महाराज अक्षरपुरुषोत्तम का भव्य स्वरुप हैं, यह जोर-शोर से काकाजी ने डिक्लेयर किया। थोड़े से मुट्‌ठी भर लोगों के सिवा कोई मानता नहीं था। अच्छे साधु मानते, लेकिन सेवन के लिए कोई तैयार नहीं। तब बापा ने काकाजी द्वारा संकल्प से ही स्वयं की स्वरुप निष्ठा का एस्टेब्लिशमेन्ट किया कि इनके द्वारा ही मुझे काम लेना है और गुणातीत समाज के नेता उन्हें ही बनाना है। यूं योजनापूर्वक जोगी महाराज ने काम किया।

✷✷......अक्षरपुरुषोत्तम की संस्था में जो प्रखर कार्य शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने किया उसे सोलिडीफाई करने में, गुणातीत समाज का प्रगटीकरण करने में एक-एक बड़े जितने गिने जाते हैं, वे सभी 'काकाजी' और 'बा' की सेरेछाया और प्रेम के वश आ गए। बापा उन सभी को ताड़देव भेजते। 'जाओ...... ताड़देव, अक्षरधाम का तख्त वहां है' और सभी युवकों को वहां से प्रेरणा मिलती, माहात्म्य समझते। **—प.पू. पप्पाजी**

✷ पू. काकाजी को मैं सुहृद् सम्राट कहता हूँ। अनंत प्रकार की आंधियाँ, मुश्किलें-झंझट आए तब भी पू. काकाजी के जीवन में मुक्तों के प्रति की प्रीति कभी कम नहीं हुई। हम एक रुचि से, एक दिल से और शांति से भज सकें, उसके लिए उन्होंने खूब परिश्रम किया। अपनी ओर से खूब प्रेम दिया। खुले दिल से सहज, सुहृद्भाव से हमारी परवरिश करी है।

मन-बुद्धि को दासी बनाकर प्रभु के आकार से बनाने का, मुक्तों के आकार से बनाने का एक सुन्दर मौका इस गुणातीत सत्पुरुष ने स्वयं जीकर, एक मंगलकारी दर्शन कराकर हम सभी को अद्भुत प्रेरणा दी है।

–प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

✷ पू. काकाजी की आज्ञा पालने से-उनके संकल्प से रेत में भी जैसे जहाज चले, यूं रेत में ही हमारा जहाज पू. काकाजी ने चला कर बताया।

पू. काकाजी ने ऐसे-ऐसे अनुभव कराए हैं कि पू. काकाजी जो कुछ भी बोलें, जो कुछ भी कहें, जो आज्ञा करें उसमें यदि विश्वास रखें तो सच में हमारा काम हो जाए।

–प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

✷ पू. काकाजी ने अद्भुत आदर्श रखा। सुहृद्भाव किसे कहा जाता है–वह पू. काकाजी ने बताया। 51 योगेश्वर बनाने के समय बापा कैसे भव्य स्वरुप हैं, उसका डंका बजाया। पू. काकाजी यानि- सतत् कथावार्ता व भजन। देहभाव से पर का जीवन था। पानी का ग्लास हाथ में हो, तब भी घंटे तक बातें करें। उन्होंने अपमान करने वाले का भी अभाव नहीं लिया। पू. काकाजी ने संबंध वालों के प्रति आत्मीयता प्रगटाई। अक्षरधाम के ही मुक्त हैं, वह माना और सब को मनवाया।

–प.पू. साहेब

✷ स्वरुप के आधार पर पू. काकाजी लकड़ी की तलवार से खेल सकते थे। पू. काकाजी को बापा में अप्रतिम विश्वास था।

–प.पू. हरिभाई साहेब

✷ दूर-सुदूर अमेरिका में जहां सत्संग का ऐसा वातावरण जम ही ना सके, ऐसे प्रदेश में पू. काकाजी ने खुद आकर हमारा हाथ पकड़ कर अपना बनाया-वही हमारा अहोभाग्य है।

–प.पू. दिनकरभाई (चिकागो)

✷ पू. काकाजी ने हम पर खूब अनुग्रह किया है। कृपा बरसाई हैं। पर उनके पास यदि हम सरलता रखेंगे तो हमें घिसटना नहीं पड़ेगा। उनके सान्निध्य में और दृष्टि में आने के बाद कण जितना भी कोई स्वभाव रह ही नहीं पाता।

–पू. कांतिकाका

✷ वास्तव में वे इतने महान थे कि उनके साथ जब भी हम उठते-बैठते थे, हमें कभी यह महसूस नहीं हुआ कि हम उनसे छोटे हैं।

✷ जीवन में एक बार भी कोई पू. काकाजी को मिला होगा, तो वह उन्हें कभी भुला नहीं सका होगा–ऐसा प्रभुताभरा आकर्षक व्यक्तित्व था वह।

–प.पू. गुरुजी

✷ योगीजी महाराज ने जो संकल्प किया, वह पू. काकाजी ने झेला-खूब कसनी सही, खत्म हो गए हमारे लिए।

–प.पू. बा

✷ 1948 की साल में पू. काकाजी दादर रहते। ताड़देव पू. कमला बहन (पू. काकाजी की बहन) का घर बड़ा था....पू. कमला बहन जब प.पू. सोनाबा के पास नीचे जाते तो मैं व पू. तारा बहन उनके घर पढ़ने जाते–घर संभालते। एक बार मैं पढ़ रही थी तो पू. काकाजी ऑफिस से आए और मुझे पूछा कि क्या पढ़ रही हो? मैं उस समय साईन्स की किताब पढ़ रही थी। सो, मैंने जवाब दिया कि–'साईन्स पढ़ रही हूँ'। तो पू. काकाजी बोले 'क्यों'? मैंने कहा-'मुझे डॉक्टर बनना है'। तो बोले–'तुम इस लोक के डॉक्टर बनो, पर हम तो जन्मोजन्म के रोग टालने वाले डॉक्टर बनेंगे'।

1948 में तो साक्षात्कार भी अभी नहीं हुआ था। पर, पू. काकाजी की मस्ती पहले से ही कुछ अनोखी थी-वे अनादि के थे। उनकी यह बोलने की अदा और छटा अभी भी याद है।

–पू. ज्योति बहन
गुणातीत ज्योत

✷ पू. दादुभाई एक आर्षदृष्टा पुरुष ! स्वयं ही पूरी संस्था हो वैसा विशिष्ट व्यक्तित्व। हमेशा हँसता चेहरा। योगी-योगी की धून मस्त बन कर करते रहते। पू. बापा के साथ बात करके मुझे लंदन भेजने वाला वह पुरुष ! लंदन उनके पत्र आते-उनमें खुद के स्वार्थ की ज़रा भी बात नहीं। केवल सत्संगियों के हित के लिए ही लिखते थे। यहां (भारत) आऊं तब भी मुझे कहते कि हमें योगीजी महाराज,

शास्त्रीजी महाराज और महाराज का काम करने में बड़ी कमाई है। पू. काकाजी के संग से मुझे भी सत्संग का पूरा-पूरा रंग लगा और जब तक लंदन रहा तब तक पू. बापा, पू. दादुभाई राजी हों–वैसी सत्संग की धूनी लगा कर बैठा था। आज जो सत्संग इंग्लैण्ड, अमेरिका, केनेडा वगैरह देशों में फैला हुआ है, उसकी नींव में पू. दादुभाई और उनकी भावना है। पू. बापा के चारों हाथ उनके ऊपर हैं।

–प. भ. डी. डी. मेघाणी साहेब

ऊपर लिखे उद्‌गारों से प.पू. काकाजी के अद्‌भुत प्रतिभाशाली स्वामीसेवक भाव की पुष्टि करता व्यक्तित्व, मानवस्वरुप में सांगोपांग भगवान स्वामिनारायण की अखंड धारक विभूति का सम्यक् दर्शन होता है......ऐसा स्पष्ट लगता है कि गुरुहरि योगीजी महाराज ने साकार ब्रह्म का संदेशा व्यापक में फैलाने, प्रत्यक्ष स्वरुप में निष्ठा रखकर स्वयं जीकर यथार्थ दर्शन कराने प.पू. काकाजी रूप में **'केसरी सिंह'** पसंद किया.....कोटि-कोटि धन्यवाद साक्षात्कार कराने वाले समर्थ सारथी गुरुहरि योगीजी महाराज को और अपना सर्वस्व लुटा कर गुरुकृपा झेलने वाले लाडले पात्र प.पू. काकाजी को.......

तो आईये, हम सभी **3 फरवरी** के मंगलकारी दिन पर प्रार्थना करें कि हमें प्रगट की ऐसी निष्ठा दृढ़ हो–हम सभी को समग्र सत्संग में अखंड दिव्यभाव और निर्दोषभाव की दृढ़ता सहज ही हो जाए। हमारे स्वभाव अब बदले-प्रकृति दिव्य बने और आपने जो स्मृतियाँ दी हैं, उन्हें याद कर-करके आनंद मस्ती में रहा करें–यही गुणातीत स्वरुपों के चरणों में प्रार्थना !

✡✡✡✡✡

गम दिये मुस्तकिल, कितना नाज़ुक है दिल; ये ना जाना..............

दिल्ली-खोसला अस्पताल में दाखिल होने से पहले करीब 10-12 दिन से बातों-बातों में कई बार के. एल. सहगल के गाने की ये पंक्तियाँ प.पू. गुरुजी बोल देते और फिर थोड़ा हँस भी देते.....मंदिर के स्टाफ एवं रोज़ाना आते-जाते आत्मीय स्वजन सरीखे मुक्तों को अब यह जरूर याद आता होगा...... प.पू.काकाजी प.पू. गुरुजी द्वारा यूं ईशारा देते रहे, पर हमारी इतनी समझ कहाँ कि इस बात को पकड़ पायें !

एक बार मंदिर में अपनी हस्तरेखाओं के बारे बातें करते हुए, हथेली पर एक क्रास दिखाते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा था कि 61-62 साल की उम्र पर आने वाले खतरे का यह निशान है। पर, प.पू. काकाजी रक्षा करते हैं और करते रहेंगे.....और यह साबित करेगा कि प्रगट के उपासकों पर ग्रह-पनौती-ज्योतिष शास्त्र वगैरह की हकूमत नहीं चलती। इनकी यह सब बातें अब याद आती हैं.......

जिन्दगीभर नहीं भूलेंगे-**24 दिसम्बर**' 97, जिस दिन प.पू. गुरुजी की 'बाईपास' सर्जरी हुई और उसमें भी हमारे प्रति उनकी कैसी अप्रतिम प्रीति होगी कि हमारे कारण उन्होंने यह असहनीय दर्द स्वयं की देह पर झेला.....प्रश्न उठेगा कि किस कारण उन्होंने यूं अपनी देह पर सब लिया?

प.पू. गुरुजी को हुई हार्ट की तकलीफ के बारे खबर देने जब पू. हरिभाई साहेब को भी माणावदर फोन किया, तो वे दो वाक्य बोले कि– **'दिल्ली मंडल को आध्यात्मिकता में एक कदम आगे ले जाने के लिए प.पू. गुरुजी ने यह बीमारी ग्रहण करी है.......प.पू. काकाजी ने जो किया है, वो हमारा हित करने ही किया है........'** बिल्कुल ऐसे ही शब्द पू. वशीभाई (ताड़देव) ने पू. दीदी से बात करते हुए कहे– **'यह बीमारी ग्रहण करके प.पू. गुरुजी दिल्ली के हरिभक्तों को सीधा ही एक डिग्री आगे ले गए हैं'।**

एक पहलू यह भी है कि अपने आश्रित भक्तों के कष्ट–प्रारब्ध सच्चा संत अपनी देह पर लेता है, उसकी एक झलक भी निम्न प्रसंग से दिखती है.......

मुंबई के प.भ. भाविनभाई की मिसीस सौ. चेतना भाभी जिन्हें प.पू. गुरुजी अक्सर 'जाड़ी' कहते हैं, उन्हें एक बार हार्ट की कुछ तकलीफ हुई। वे शिरडी वाले श्री साईंबाबा की भक्त हैं। उन्हें उन दिनों मन ही मन ऐसा विचार रहता कि मैंने बाबा की इतनी भक्ति करी है तो बाबा कम से कम एक बार तो सपने में मुझे ऐसा कह दें कि तुझे कुछ नहीं होगा। उन दिनों प.भ. भाविनभाई का दिल्ली कुछ फोन आया और उसमें सौ. चेतना भाभी के हार्ट की बीमारी का उन्होंने यूं ही जिक्र करा। बात सुनते ही प.पू. गुरुजी फट से बोले कि 'जाड़ी' को कहना–'चिंता ना करे, तुझे कुछ नहीं होगा'। यूं भक्तों को प.पू. गुरुजी कष्ट मुक्त करते भी रहते, परन्तु साथ-साथ अपना स्वामीसेवक भाव ना भूलकर प.पू. काकाजी से वे प्रार्थनारुप में यह भी कहते कि हे प्रभु ! मैंने यह कह तो

दिया है, सो भले ही सजा मुझे देना, पर सेवक की रक्षा करना। **ऐसा है प.पू. गुरुजी का भक्तों के प्रति का दिल और.....उनकी आध्यात्मिक शिस्त** !

इसके अतिरिक्त एक अन्य पहलू यह भी है कि–मंदिर के सेवक प.भ. ऋषि एवं प.भ. निर्दोष को 18 जनवरी '98 को साधु की दीक्षा देनी थी, सो माया ने इस प्रकार अपना रूप दिखाया हो......प.पू. गुरुजी ने एक बार बताया भी था कि **जब भी कोई जीव माया को ठुकरा कर भगवान की राह पर चलने का संकल्प करता है, तो माया बुरी तरह चिड़ कर अपने खेल खेलने लगती है।**

प.पू. बापा ने जब 51 युवकों को गढडा में दीक्षा दी, जिसमें प.पू. गुरुजी भी शामिल थे, तब प.पू. बापा ने स्वयं बीमारी ग्रहण करी व भयंकर तेज़ आंधी के कारण एक लाख लोगों के लिए बांधा गया टेन्ट उड़ गया.....दो बच्चे घेला नदी में डूब गए......एक बच्चा गरम हलवे के कुंड में सरक गया......लेकिन प.पू. काकाजी ने स्वयं पर सारी जिम्मेदारी लेकर हर प्रकार से सब अच्छी तरह निपटाया....सो, बड़े पुरुषों की रीत हम कहां समझ पायेंगे?

लेकिन.....फिर भी इन सभी मतों से अलग जो एक रहस्य समझने प.पू. गुरुजी ने अपने शरीर पर यह कष्ट लिया–उसे समझना भी खूब जरुरी ही है।

प.पू. पप्पाजी ने अभी थोड़े दिन पहले ही बताया था कि–गुणातीत पुरुषों को वैसे बीमारी आ ही नहीं सकती, पर अपने निजी सेवकों, समर्पित गृहस्थों व अपने साथ जुड़े समाज के–
मन-बुद्धि के कई प्लेटफार्म छुड़वाने,
उनके भजन में तीव्रता लाने,
साधना मार्ग में प्रगति करवाने,
कई प्रकार की जड़ता छुड़वाने,
चोट लगा कर हमें प्रकृति व प्रारब्ध के शिकंजे से मुक्त करवाने अपनी देह पर कष्ट व पीड़ा सहन करके बीमारी ग्रहण करते हैं.....

अपने संबंध वालों के प्रति यह कैसी अद्‌भुत प्रीति व करुणा ! उसकी कल्पनामात्र भी करना कठिन है.....श्री कृष्ण व अर्जुन का प्रसंग हम जानते हैं कि–भगवान श्री कृष्ण पर एक बार इन्द्रदेव किसी बात से खूब प्रसन्न हुए, तो उन्होंने कहा कि आप तो अवतार पुरुष हो, फिर भी मुझ से आज कुछ भी माँग लो। तब, श्री कृष्ण ने यही माँगा कि–'अर्जुन के प्रति मेरी प्रीति शाश्वत रहे'!

यूँ–प्रभु को तो अपने भक्तों से प्रीति होती ही है लेकिन हम सभी के लिए **प.पू. गुरुजी का ऑप्रेशन होने का यह जो प्रसंग बना है, उसे खूब गहराई से निहारने की अब हमारी फर्ज है;** ताकि फिर कभी भविष्य में हमारे प्राणाधार पुरुष को हमें सूझ देने के लिए ऐसे घाव ना झेलने पड़ें......

पू. दीक्षा दीदी ने मुंबई से नए वर्ष निमित्त प.पू. दीदी को प्रार्थना रूप कार्ड लिख कर भेजा, उसमें भी यही लिखा है कि–'.......गुरुजी ने जो हम सबकी स्पीरीच्युअल डेवलपमेन्ट के लिए अपनी बॉडी पर अन्टोलरेबल सफरिंग्स या बीमारी ग्रहण करी है, उसे मैं जिन्दगी की आखिरी साँस तक याद रखूँ और जैसा गुरुजी और आप चाहते हैं–बस वैसा ही गुरुजी की इच्छा के अनुसार–उनकी ही मर्जी के मुताबिक मेरा पल-पल का जीवन हो जाए, ऐसे आप मुझे आशीर्वाद देना....'

तो आईये, हम सभी अपने भीतर में टटोलें कि–

– हमने किस-किस रूप में गुणातीत पुरुषों को ठेस पहुँचाई है?
– कहाँ-कहाँ हम अपने मन, इन्द्रियों अंतःकरण के वेग में, आसक्तियों में झूल कर निशान चूक गये?
– कितनी बार मन, कर्म, वचन द्वारा, व्यक्त-अव्यक्त अपेक्षाएँ रख कर हमने उनको दुःख पहुँचाया है?
– संबंध वाले मुक्तों के प्रति अनेक प्रकार के मनमुटाव-गलतफहमियाँ रखकर सत्पुरुष के दिल को अत्यधिक चोट पहुँचाई है?

दरअसल तो हमारे उनके प्रति के कई प्रकार के मायिकभाव-मनुष्यभाव के उठते इन स्पंदनों का पाप हम पर ना चढ़े, सो–बड़े पुरुष स्वयं पर बीमारी के रूप में उसे झेल लेते हैं।

ताड़देव में एक दिन सुबह तो प.पू. काकाजी एकदम ठीक ठाक थे। दोपहर को आराम करके उठे तो उन्हें यकायक सर्दी, जुकाम, बुखार हुआ नज़र आया। सेवकों ने डॉक्टर को बुलाने का आग्रह किया। पर, वे इस बात पर तनिक भी माने नहीं और जो-जो हाजिर थे, उन सबको हमेशा की तरह धून करवाने लग पड़े। लेकिन धून करवाने से पहले बोले कि–'**यह सब तो तुम्हारी झंझटों (मोंकाळ) के कारण है......मेरे प्रति कैसा मायिकभाव परखते रहते हो? वह सब पाप तुम पर ना चढ़े, सो यह सब मेरे पर लिया है.......**'

शायद यह भी एक कारण होगा जो कि आज प.पू. गुरुजी अपनी देह पर इतना कष्ट झेल रहे हैं....

हर एक अपने भीतर के 'जोगी' से सच में यदि अन्तर की सच्चाई से पूछेगा, तो दिल गवाही दे ही देगा कि–

कहाँ-कहाँ हमने इन्हीं कारणों से जीवन में प्रथम स्थान संत का नहीं रखा......बल्कि अपना बचाव करते रहे !

उनकी निःस्वार्थ एवं निर्व्याज प्रीति, चैतन्यलक्षी क्रियाओं को अपने मन के ढाँचे में ढाल कर नापातोली करी.....

साधु से छुपाछिपी, धोखाधड़ी–बनावट करी।
और जब–
हम अपनी मानसिक भूमिका छोड़ने तैयार ही नहीं हुए तो–
आखिर प.पू. गुरुजी ने अपनी देह पर लेकर हमारी चेतना को धक्का लगाया..........

सच ही है ना कि हम उनकी हर क्रिया की नापातोली करते रहते कि–
वे इतना ठीक करते हैं, इतना ठीक नहीं करते......
प.पू. गुरुजी ने ऐसा क्यों किया....?
प.पू. गुरुजी को तो ऐसा करना चाहिए था।
प.पू. गुरुजी तो अब नयों को ही संभालते हैं, पुरानों को भूल गए.....
फलां व्यक्ति ने मेरे बारे प.पू. गुरुजी को ऐसा गलत-सलत कह दिया। सो, उसके बहकावे में आकर प.पू. गुरुजी का रुख अब मेरे प्रति बदल-सा गया है। यूं अपने ढंग से सोच कर प.पू. गुरुजी की हम एक सामान्य व्यक्ति की भाँति ही गिनती करते रहे.....
हमने शुरुआत में कितनी सेवा करी थी, कितना साथ दिया था! पर, उसकी कीमत प.पू. गुरुजी ने नहीं रखी वगैरह-वगैरह कितने प्रकार के आक्षेप.....

चाहे हमने उन्हें अपनी जुबान से बोल कर नहीं कहा, लेकिन भीतर ही भीतर ऐसे कितने मायिक स्पंदनों में ही डूबे रह कर हम साधु का द्रोह करते रहे....पर, उस साधु की दयालुता कैसी कि हमें कहीं ऐसे अक्षम्य द्रोह का पाप ना लगे–उसके लिए उन्होंने हमें प्रभु की नाराज़गी से बचाने के लिए आज अपनी देह पर सारा झेल लिया......

श्रीजी महाराज ने वचनामृत में कहा है कि–'तुम अगर मेरा यानि–स्वयं भगवान का द्रोह करोगे तो मैं तुम्हें माफ कर दूँगा। पर, मेरे साधु का यदि द्रोह किया करोगे तो वहाँ मैं निरुपाय हूँ और तुम्हें उसका भोगना पड़ेगा.....' यह कोई डराने-धमकाने की बात नहीं। पर, **अगर अब भी हम नहीं समझेंगे तो भारी खोट हमें ही होने वाली है।** इसी बात की पुष्टि करता, प.पू. गुरुजी का दिल्ली के मुक्त समाज पर कृपा बरसाता नए वर्ष का मुंबई से भेजा मेसेज पढ़ें–

At the beginning of a new year,
it feels good to keep in touch
with the people in Delhi who are special
and remembered very much by me.

I hope you must be realising
how much I must be feeling
void of you these days.
May we not in future commit
such folly to get punishment of this type.
So, this day let us all pray H.D. Kakajee
to forgive us all for whatever we have done
that has hurt Him so much
to punish us so cruelly.

Real 'Suhard Bhav' is the
only way to please H.D. Kakajee.

'नए वर्ष की शुरुआत में
मैं **दिल्ली में भक्तों** के संग रहना
बहुत अच्छा महसूस करता,
जो कि मेरे लिए विशेष हैं,
और
जिन्हें मैं खूब याद करता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि–
आप सब के बिना इन दिनों
मुझे कितना खालीपन लगता होगा
उसका आप अन्दाजा लगा पाये होंगे।
अब कभी भविष्य में हम ऐसी मूर्खता ना करें
जिससे हमें इस तरह की सजा मिले।
तो, हम सब आज के दिन प.पू. काकाजी को प्रार्थना करें कि–
हमारी जिन गल्तियों ने उन्हें ठेस पहुँचाई है।
जिससे हमें ऐसी सज़ा मिली है
उसके लिए माफी दे दें।

केवल सच्चे 'सुहृदभाव' का रास्ता ही
प.पू. काकाजी की प्रसन्नता दिला सकता है'।

असल में प.पू. गुरुजी हम सब के लिए हद से ज्यादा सस्ते बने, सो हम उनकी महिमा समझ नहीं पाए। बल्कि उनकी नापातोली किया करी और वे निरन्तर हमारी लापरवाही, नादानियाँ, मनमानी, बचपना, बनावट, हकदावा सहते ही रहे, सहते ही रहे...जबकि हम सभी जानते भी थे कि हमारे प्रभु–प.पू. गुरुजी को क्या पसंद है? पर फिर भी....हम में से किसी ने भी नहीं सोचा कि अरे! हम यह क्या कर रहे हैं? हम अपने भीतर ही सोचें कि **प.पू. काकाजी द्वारा प.पू. गुरुजी के रूप में दी हुई अमूल्य भेंट को हमने कितना संभाला? कितना साथ दिया?**

गुरुहरि योगीजी महाराज को एक बार प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने कहा कि–
'बापा आप अधिक से अधिक इस देह से हमारे बीच रहो, उसके लिए हम क्या करें'?
तब प.पू. बापा ने बताया था कि–
'आप पाँच एक होकर रहोगे तो मैं 25 वर्ष इस देह से ज्यादा रहूँगा.....'

हमारे स्वरूप ने हमें कई बार डाँट कर, तो कई बार प्यार से कहा कि–

✷ मिलजुल कर रहो...
✷ किसी का दोष देखना नहीं.....
✷ कर्ता हर्ता 'सर्वोपरि स्वामिनारायण' को मानो....
✷ हर संजोगों में 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन का उपाय लो......भजन का आधार लो.....

पर, हम अपने मानसिक दायरों में ही रहे.....**दूसरों की क्रिया–दोष देखने के अलावा और धंधा ही क्या किया,** वो हम अपने भीतर से ही पूछें तो?

और

प्रभु के आधार के अलावा सभी आधार पकड़ने की कोशिश में रहे....

पर,

यदि उनका ही एकमात्र आधार लेते, नाभि का भजन यदि हम करते रहते तो शायद हमारे प्यारे प्रभु को यह कदम उठाना ही नहीं पड़ता ना !

हमने उनकी रहस्यमयी बातों को भी मज़ाक में टाल दिया.... सुनी- अनसुनी जैसी कर दी

या तो फिर–

अपने ही मन के ढाँचे के मुताबिक गलत लेकर

प.पू. गुरुजी से दूरियां बढ़ाते ही रहे–बढ़ाते ही रहे.....

दिल्ली में प. पू. गुरुजी के 'खोसला अस्पताल' में रहने के दौरान गुजरात एपार्टमेंट्स–'गोकुल' के हरिभक्तों ने प्रार्थना रूप कार्ड दिया जिसमें एक फूल बनाया था और उसकी चारों पंखुडियों में संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों–यूं नाम लिख कर प्रार्थना लिखी थी–

'With your grace, may we live like petals of the same flower.....'

यानि–

'आपकी कृपा से हम एक ही फूल की पंखुड़ियाँ बनकर रहें–सुहृद्भाव से जीवन जीएँ.......'

जिसका प्रत्युत्तर प.पू. गुरुजी ने दिया–

'I feel, the entire process is being oriented by MAHARAJ for this purpose only'.

अर्थात्–

'मेरे ख्याल से इसी हेतु यह सारी प्रक्रिया महाराज ने गढ़ी है'।

सच ! हमें स्वरुप की जैसी महिमा समझनी चाहिए थी, वैसी हमने नहीं समझी....हमें राख के भाव सोना मिला ! हम सोने के जेवर को तो संभाल कर रखते हैं, पर सत्पुरुष के वचन हमने इतने भी नहीं समझे। इतनी भव्य प्राप्ति होने के बाद जो हमें अखंड आनंद-प्राप्ति की मस्ती, अहोभाव रहना चाहिए था–वो रहा?

और......

भगवान के ऐसे सच्चे संत जिसने केवल निःस्वार्थ प्रेम ही बहाया,

स्वयं गरजु बन कर हमें सर्वदा सुखी ही करने की चाहना रखी,

हमें प्रभुधारक सत्ता के भी कितने अनुभव कराये,

पर हमने उस अनमोल करुणानिधि की सामान्य सोने जितनी भी कीमत नहीं समझी ! बल्कि उन्हें उलाहने देते रहे कि हमने तो कितना-कितना करा, पर आपने हमारी गिनती नहीं रखी......सच्चे संत ने हमारे भीतर के गटर की गंदगी की सफाई करने के लिए **हमारे हठ, मान, ईर्ष्या को तोड़ने के लिए थोड़ा-सा भी छेड़ा तो हमने बिदके हुए घोड़े की भाँति उन्हें ही लातें मारी या मुँह फूला लिया कि हमें तो सबके सामने नीचे गिरा दिया.....फिर भी वे हमें किसी तरह मना कर, समझा कर, पटाकर अपने प्यार का धोध हम पर बहाते ही रहे.....**

इसी संदर्भ में मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की प्र-6 की 218वीं बात याद आ जाती है कि–

'अंत्य. प्रकरण का दूसरा वचनामृत पढ़वाया। उसमें बात आई कि तप, त्याग, योग और यज्ञ से वश नहीं होता, पर **'सत्संग'** से वश होता हूँ,' यूं श्री कृष्ण भगवान ने उद्धव को कहा। यह बात आई तब स्वामी बोले–यह बात सुनो ! जो कहना है वह सब इतनी बात में कह दिया है। यह पढ़ कर कहा कि तप, त्याग, योग, यज्ञ द्वारा वश नहीं होता और सत्संग से ही होता हूं–ऐसा सत्संग हमें मिला है, पर पहचाना नहीं जाता। साधु मिलने तो दुर्लभ हैं और यह सारी सभा बैठी है, उसमें भी वह बात तो जो जानता है वो ही जानता है। सभी के लिए समझना बस की नहीं है....रघुवीरजी महाराज आदि बड़े-बड़े साधु कोवैया (गांव) की सीमा पर बैठे थे, उन्हें छोड़ कर तीन सौ जने समुद्र देखने दौड़े ! तब तो समुद्र जितने भी ये रघुवीरजी महाराज आदि को नहीं माना ना? लेकिन ज्ञान कहाँ है? इन्हें छोड़ कर दूसरे को चिपकते हैं, उनमें क्या बरकत आयेगी?

........अहो ! जीव को साधु पहचानना कहाँ आता है। साथ रहें और पहचाने नहीं, पर यदि सच में पहचाने जाएं तो पागल हो जाएंगे। पर, ऐसे पहचाने नहीं जाते, इतनी ही कसर है। जैसे जहाँ बरसात खूब होती हो वहाँ अकाल का दुःख कहाँ है? यूं जूनागढ़ में साधु बहुत और वे खूब बरसे भी !! लेकिन जब बरसात नहीं होगी, तब बहुत दुःख होगा। यहां तो बरसात की झड़ी लगी है; और जगह तो बरसात के बिना तो अकाल जैसा है। सो ही हजारों मील दूर से खींचे जा कर लोग यहां दर्शन करने आते हैं। जबकि–यहां जूनागढ़ के हरिभक्त यूं सोचते हैं कि देरी से जाएंगे, वर्ना कहीं नौकरी छूट जायेगी तो क्या करेंगे? नौकरी तो यहीं पड़ी रहेगी और चल बसना होगा ! और ये साधु हमेशा रहेंगे क्या? ये दर्शन तो बहुत दुर्लभ हैं। फिर आँसू की धारा बहेगी। ये दर्शन फिर मिलें ऐसा नहीं है.....ऐसा संग तुम्हें मिला है, सो करना हो तो कर लेना.....और कितना कहें? ऐसे साधु के समागम के बिना मोक्ष नहीं होगा और मध्य के 21वें वचनामृत में जो कहा है, वही करना है और समझना है। ऐसे साधु मिले यह तो बहुत

बड़ी बात हाथ आई है और पहले जिनको संस्कार हुए हैं, वे भी ऐसे साधु के संबंध से हुए हैं और अब भी जिन–जिन के हो रहे हैं, वे भी इस साधु के संबंध से ! सो संबंध कर लेना। ब्रह्मांड में भी ऐसे साधु ढूँढने पर कहाँ मिलेंगे? और यूं बिठा-बिठा कर बातें कौन करेगा? साधु के बिना कोई नहीं कहेगा।

प. पू. गुरुजी का ऑप्रेशन होने के बाद 26 दिसम्बर'97 की रात को सौ. निशि दीदी को प.पू. गुरुजी ने सपने में दर्शन दिए और एक चिट्ठी में लिख कर भेजा कि–

'मेरे खून का तो पानी हो गया था, पर महाराज ने तुम लोगों के लिए वापिस भेजा है। यह बात समझ कर रखना ! तुम सब के साथ की मुझे जरुरत है, मुझे सहयोग देना। सब अच्छा-अच्छा रहेगा.......'

हम माने या ना माने पर प.पू. काकाजी ने हम सब के जड़ तंत्र को जाग्रत करने ही अपने लाडले प.पू. गुरुजी पर बीमारीरुपी शस्त्र उठाया है। अगर अब भी हम जाग्रत नहीं बने तो......? **करना तो सिर्फ इतना ही है कि उनकी हाँ से हाँ और ना से ना.....** 24 दिसम्बर '97 (प.पू. गुरुजी की बाईपास सर्जरी) की तारीख जो पल-पल याद रखेगा, वो साधक हमेशा अपने आप स्वयं जाग्रत रहेगा और प.पू. गुरुजी को दुःख पहुँचाने वाली क्रिया कर ही नहीं पायेगा.....तो, अब तो इस राह की ओर अग्रसर होने कृतनिश्चयी बनें !

✡✡✡✡✡

प. पू. गुरुजी की अस्वस्थता...........
या
आत्मीयता व कल्याण योजना का दर्शन !

गुणातीत समाज एवं प. पू. गुरुजी के प्रति एक लगाव से जुड़े मुक्तों की जानकारी हेतु–

ऑप्रेशन के बाद प. पू. गुरुजी अस्पताल से दिनांक 9 जनवरी को छुट्टी मिलने पर मुंबई में प. भ. जे. एम. पटेल साहेब के यहां 3 दिन रुक कर दिनाँक 13 जनवरी को प. पू. पप्पाजी की आज्ञा से प. पू. साहेब की सेरेछाया में 'ब्रह्मज्योति' की तपोभूमि पर आकर स्वास्थ्य लाभ के लिए रह रहे हैं......दिन–प्रतिदिन उनकी तबियत में सुधार हो रहा है। प. पू. स्वामिजी ने भी प.पू. गुरुजी को निर्भयता के आर्शीवचन देते हुए कहा है कि-'**हमें तो निमित्त बन कर सेवा करनी है। सो 100% सब कुछ ठीक हो ही जाने वाला है और तेरी सारी एक्टीवीटीज़ पहले की तरह ही हो जायेगी। तो इस बारे तो चिन्ता या सोचने की कोई बात ही नहीं रहती**' ! प. पू. पप्पाजी की आज्ञा है कि जब तक दिल्ली में ठंड कम ना हो तब तक प. पू. गुरुजी यहीं रुकेंगे और आराम करेंगे और.... प.पू. साहेब से अत्यधिक आत्मीयता से जुड़े आणंद के डॉ. पंकज पारिख-कार्डियोलोजिस्ट 'ब्रह्मज्योति' पर अक्सर आकर प.पू. गुरुजी की देखभाल भी कर रहे हैं......

मुंबई तो जैसे प. पू. गुरुजी कहते हैं कि–**'मेरा ननिहाल है.....'** इस बात का हर एक को अहसास हुआ.....उदाहरण स्वरुप प. पू. कांतिकाका के बंधुमैत्री महोत्सव की तैयारियों में अत्यधिक व्यस्त होने के बावजूद पू. भरतभाई, पू. वशीभाई, पू. हरखचंदभाई, पू. हेमन्तभाई मर्चंट, पू. राजुभाई भट्ट वगैरह सब प. पू. गुरुजी के साथ के लगाव के कारण किसी भी तरह समय निकाल कर अस्पताल आये बिना अपने आपको रोक नहीं पाते.....

डॉ. महेन्द्रभाई मर्चंट के बारे तो क्या लिखें? जैसे कि पहले लिखा था–उन्होंने जो अटमोस्ट केयर से प.पू. गुरुजी की देखभाल करी है, प. पू. गुरुजी को अटेन्ड किया है, हर एन मौके पर प्रोम्प्ट एक्शन लेकर परिस्थिति को संभाल लिया है, वह कभी कोई भूला नहीं पायेगा। जिस तरह उन्होंने अस्पताल में प. पू. गुरुजी की सुविधा रखवाई, उसे देखते हुए पता लगता था कि उन्हें प. पू. गुरुजी के साथ कोई अलग–सी प्रीति है.......इतना ही नहीं, प. पू. गुरुजी की ऐसी महिमा भी उनके जीव में भरी हुई है !

पत्रिका के पिछले अंक में जैसे कि जिक्र कर चुके हैं–मुंबई, लीलावती अस्पताल में प. पू. गुरुजी के ऑप्रेशन दौरान प. भ. प्रमीत संघवी (दिल्ली) के साले साहेब प. भ. अनिलभाई भिण्डे व परिवार ने जिस अपनेपन से सेवा और सहयोग दिया, वह देखते हुए प. पू. काकाजी द्वारा प. पू. गुरुजी को दिए आशीर्वाद कि–**'निष्ठा वाले भक्त तुम्हें मिल जाएंगे.....'** वह एकदम याद आ जाता था। इनका घर अस्पताल के एकदम सामने ही होने के कारण सेवकों को हर प्रकार की सुविधा रही। इसके अतिरिक्त एक अद्भुत दर्शन हुआ कि–सारा परिवार ही प. पू. गुरुजी में इतना खो गया था कि उनका अपने रिश्तेदारों से सम्पर्क तक टूट–सा गया था। उसकी मिसाल यह बनी कि एक दिन सौ. काश्मीरा भाभी के लिए उनकी भाभी का फोन आया कि– 'आप लोग क्या कर रहे हो? हमें भूल गये हो क्या'? सौ. काश्मीरा भाभी ने फट् से उत्तर दिया–**'आपको ही नहीं, बल्कि प. पू. गुरुजी की लीलावती**

अस्पताल में हार्ट सर्जरी होने के कारण उसमें मैं सब कुछ भूल चुकी हूँ' । यह सिर्फ कहने की बात नहीं थी, पर वाकई उनके मन की परिस्थिति ऐसी ही थी। सो, जिस दिन अस्पताल से छुट्टी लेकर प. पू. गुरुजी उनके घर 'पधरामनी' के लिए गये, तब वे सुबक–सुबक कर रो पड़ीं।

ठीक इसी तरह एशियन ऑप्टीक्स वाले प. भ. वी. के. अग्रवालजी (दिल्ली) के जीजाजी प. भ. ओ.पी. अग्रवाल व उनका परिवार भी प. पू. गुरुजी में खो गया था। 24 दिन प. पू. गुरुजी व दिल्ली से गए सेवक जो मुंबई ठहरे, इस दौरान घर से अस्पताल व दवाई लाने करने या सेवकों को लाने–ले जाने के अलावा उन्हें अन्य कोई प्रवृत्ति ही नहीं थी। इतना ही नहीं, रोज़ शाम को विज़िटींग अवर्स के समय अस्पताल आकर प. पू. गुरुजी को मिलने आये मुक्तों को रिसेप्शन हॉल से एक-एक करके भेजने की वे लगातार ड्यूटी भी देते। वे इतने रसबस हो गए थे कि प. पू. गुरुजी के ब्रह्मज्योति आने पर उनके कई बार फोन भी आये कि–**'हमें तो अब यहां सूना-सूना लगता है; मानो हमारे लिए यहाँ कोई काम ही नहीं रहा........'**

दूसरी ओर–सौ. शोभना भाभी (दिल्ली) के मायके वाले यानि–दशरथ परिवार और उनसे जुड़े परिवारों की बात ही कुछ अलग थी। इनकी सेवा, अपनापन व प्रीति इनकी हर बातों–क्रियाओं में बहती नज़र आती थी। सौ. शोभना भाभी ने जिस कदर सत्संग को अपने जीवन में उतारा है-बसाया है, उसकी गवाही मानो ये सब दे रहे हों ! प. भ. समीरभाई का प. पू. गुरुजी से जो लगाव है, उसे तो हर कोई जानता है......प.पू. गुरुजी से जब-जब वे बिछड़ते हैं, तो उनकी आँखों से गंगा–जमुना बहनी शुरु हो ही जाती हमने देखी है। पर, अब की बार उनकी सेवा से प. पू. गुरुजी ही इतने भावुक थे कि प. भ. समीरभाई से बिछड़ते हुए उनकी आँखें नम हो गईं थी।

आत्मीय सम्राट प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी से अत्यधिक जुड़े हुए प. भ. जे. एम. पटेल साहेब के घर पर तो बस जनक विदेही का ही दर्शन हुआ करता था। उनके यहां जाते ही उन्होंने खूब विनम्रभाव से कहा कि–'मुझे आवभगत व खातिर करनी नहीं आती; पर यहां जो कुछ भी है वह आप अपने ढंग से बेहिचक–बिना हमें पूछे करे अपने काम में जरुर ले लेना.....यहां जो कुछ भी है, वह सब कुछ प. पू. स्वामिजी के संबंध से आपका ही समझना ! यहां की सेटिंग में भी कुछ बदलाव करना हो, तो मुझे या किसी को भी पूछने करने की जरुरत नहीं'! सर्व सम्पन्न होने के बावजूद जिस सादगी से-जिस समझ से वे रहते हैं, उससे उन्होंने सच्चे अंबरीष का परिचय दे दिया.......

सच ! मुंबई रुकने दौरान जिन–जिन्होंने अपनी–अपनी भावना व श्रद्धा से सेवा करी है, उन सब को–प. भ. भगवानदासभाई, प. भ. अनिलभाई माणिक, प. भ. राजेशभाई, प. भ. पंकजभाई (दोनों), प. भ. महेन्द्रभाई ठक्कर, प. भ. संजय गुप्ता, प. भ. रमेशभाई महेता वगैरह सब परिवारों को कैसे भूलाया जा सकता है?

यू.पी. के गवर्नर साहेब श्री रोमेश भंडारी साहेब जो प.पू. गुरुजी से चिरपरिचित हैं.......वे प. पू. गुरुजी की हार्ट सर्जरी की खबर मिलते ही व्याकुल होकर लखनऊ से तुरंत 'ब्रह्मज्योति' फोन द्वारा प.पू. गुरुजी से बातचीत करे बिना रह नहीं पाये.....दूसरी ओर–माननीय श्री शांतिभाई पटेल एवं माननीय श्री भीखाभाई रबारी भी एक विशेष संबंध के नाते 'ब्रह्मज्योति' प.पू. गुरुजी की तबियत देखने आए !

और....अभी फिलहाल प.पू. गुरुजी के ब्रह्मज्योति पर ठहरने दौरान वड़ोदरा-अमदाबाद के मुक्तों–प.भ. जयेशभाई, प.भ. गिरीशभाई, प.भ. परेशभाई, प.भ. इन्दुभाई (सांकरदा वाले), प.भ. पकई साहेब, प.भ. उदयभाई, प.भ. जीतेन्द्रभाई (मामू), प.भ. शैलेश कुमार, प.भ. प्रकाशभाई, प.भ. तुषारभाई, प.भ. दिलीप कुमार, प.भ. असितभाई, प.भ. महेशभाई, प.भ. हरेशभाई दोशी वगैरह ने भी प. पू. गुरुजी की तबियत देखने आने व सेवा से एक आत्मीय दिव्य परिवार का परिचय दिया.....

✡✡✡✡✡

आईये, बंधुमैत्री महोत्सव को लेखनी से निहारें !

गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के लाडले, प.पू. काकाजी के परम सखा, समग्र गुणातीत समाज के आत्मीय गौरव शूरवीर सेनापति पू. कांतिकाका का अमृतपर्व-बंधुमैत्री महोत्सव के रूप में दिनांक 18 जनवरी 1998, रविवार के मंगल दिन 'अक्षरधाम' पवई-मुंबई में खूब ही उत्साह और आनंद से मनाया गया। सारा वातावरण भक्ति और दिव्यता से भर गया था। दूर-दूर से आया भक्त समुदाय इस अद्भुत उत्सव को मनाने के लिए अंतर की उमंग से उत्साहित हो रहा था। पवई की इस पथरीली जमीन में चारों ओर मानों आत्मीयता की हरियाली छा गई थी। जैसा आनंदोत्सव बाहर दिखाई देता था, उससे अनंत गुणा उल्लास भक्तों के दिल में उमड़ रहा था। क्योंकि आज एक ऐसे पुरुष का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा था, जो जीवनभर केवल प्रभु की परछाईं बन कर जिया और आत्मीयता की राह बना कर भक्तों के हृदय में हमेशा के लिए बस गया।

पिछले एक-दो महीने के अथाह परिश्रम और आयोजन से साकार हुआ यह महोत्सव एक अनोखा ही नज़ारा लिए हुए था। स्टेज पर पीछे पर्दे पर लगी एक भव्य पेंटिंग जैसे

अपने आप प्रतीक रूप में जीवंत रुप लेकर पूरा अतीत दोहरा रही थी। पेंटिंग में मध्य में एक नाव में रेत के बने मैदान में प.पू. पप्पाजी, बीच में पू. कांतिकाका व प.पू. काकाजी विराजमान थे......एक तरफ बैलगाड़ी में गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज विराजमान थे और.... साथ ही एक गाड़ी का मॉडल भी बना रखा था, जो ऐसा बता रहा था कि हमारे स्वरुपों ने कैसी कसनी सही और आज हमारे लिए गाड़ियों आदि की सुविधा देकर सब प्रकार से राजमार्ग तैयार कर दिया.....इसके अतिरिक्त अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के सारे मंदिर दर्शाये गये थे—जो बता रहे थे कि इनको बनाने की मूल नींव में सर्वस्व का समर्पण करके प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी. पू. कांतिकाका समा गये....

स्टेज के ऊपर आसनों पर स्वरुप व महानुभाव विराजमान थे और अलग-अलग केन्द्रों सूरत, वड़ोदरा, माणावदर, अमदावाद, दिल्ली वगैरह प्रांतों तथा लंडन, पेरिस और अमेरिका से भी मुक्त समाज स्वरुपों के सान्निध्य में इस अद्‌भुत उत्सव के पुण्य के भागीदार बनने आए....साथ ही मुंबई के भी दूर-दूर के या आस-पास के स्थानों से भी आबाल-वृद्ध सभी अपना भक्तिभाव अर्पण करने इस मंगल प्रसंग पर हाजिर थे। वे सभी, विरल पुरुष पू. कांतिकाका के चरणों में अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित करने आतुर थे !

पवई-बगीचे में 'मैत्री-सुमरन' हॉल में घुसते ही ठाकुरजी के दोनों ओर प.पू. काकाजी और पू. कांतिकाका की 'मैत्री' की अति सुन्दर और मनमोहक पेंटिंग बनी हुई थी। जिससे इन दोनों की मैत्री की अमरभावना अपने आप व्यक्त हो रही थी।

रविवार की सुबह 9.00 बजे की गुलाबी ठंड के वातावरण में भजन और श्लोकों से इस मंगल पर्व की शुरुआत हुई। पू. वशीभाई ने खूब ही भावविभोर होकर स्वागत प्रवचन किया। उसके बाद पवई की साधक बहनों द्वारा विशेषरुप से तैयार करे गए अति सुन्दर और विविध प्रकार के मनमोहक हारों द्वारा विराजमान स्वरुपों तथा महानुभावों का स्वागत किया गया....दिल्ली के मुक्त समाज की ओर से प.भ. अनिल शर्मा ने स्टेज पर बीचोंबीच विराजमान प.पू. काकाजी व पू. कांतिकाका के कटआऊट पर हार अर्पित किया.....जो कि खूब सुशोभित हो रहा था।

इसके साथ ही ताड़देव के भाईयों द्वारा पू. कांतिकाका के जीवन और कार्य पर आधारित लिखी हुई सुन्दर पुस्तक 'जहाँ आत्मीयता धन्य बनी' का अनावरण प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के वरद् हस्तों से हुआ। तत्पश्चात् इस प्रसंग निमित्त 'परछाईं' और 'कृपाप्रसाद' नामक कैसेटों का अनावरण प.पू. साहेब के पुनीत हस्तों से हुआ...कई मुक्तों ने अपने प्रासंगिक उद्‌बोधन प्रस्तुत किए। फिर थोड़ी देर के अवकाश के बाद पू. कांतिकाका के जीवन के अमूल्य प्रसंगों पर आधारित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यानगर में तैयार करी गई 'परछाईं' नामक इस नाटिका के अंत में पू. घनश्यामभाई अमीन ने जो प.पू. काकाजी की भूमिका अदा करी, उसे देखकर एक क्षण के लिए सभी आश्चर्य में पड़ गये कि—अरे ! एकदम हुबहु काकाजी कहाँ से......? यह अद्‌भुत दर्शन करके सभी की आँखें प.पू. काकाजी की स्मृति करके नम हो गई थीं या यूं कहें कि लगभग पूरा हॉल रो रहा था........

लगभग एक घंटे तक चली यह नाटिका ने सभी को सुने हुए व लिखे हुए अतीत में पहुँचा दिया, जहां गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, प.पू. काकाजी और पू. कांतिकाका का भव्य भूतकाल आलेखित हो गया था। उस प्रसंग, उस पल, उस भावना सभर दृश्य, उस मैत्री, उस प्रेम, उस संबंध ने सभी के अंतर को भावविभोर कर दिया था। सभी आश्चर्य और आनंद से इन प्रसंगों को निहार रहे थे और धन्यता अनुभव कर रहे थे।

अंत में—प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. हरिभाई साहेब के आशिष वचनों का लाभ लिया.... साथ ही अस्वस्थता के कारण प.पू. पप्पाजी व प.पू. गुरुजी इस उत्सव में भले स्थूल रुप से नहीं पधारे थे, लेकिन फिर भी उनके द्वारा भेजे आशिष संदेश से कोई वंचित ना रहा....और सभी ने प्रसाद लेकर इस उत्सव की स्मृति करते-करते विदाई ली......सभा का कार्यक्रम दोपहर 3.00 बजे तक चला, पर सभी के मुख पर तृप्ति और आनंद की आभा झलक रही थी.....यूं लगता था कि अभी भी यह कार्यक्रम और अधिक आगे चलता रहे तो.......

✡✡✡✡✡

सत्संगी बंधु भारत रत्न पू. नंदाजी........अलविदा !

ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के लाडले व कृपापात्र तथा ब्रह्मस्वरुप प.पू. काकाश्री के सखा स्वरुप एवं सत्संग के आचार्य समान श्री गुलजारीलाल नंदाजी उनके दीर्घायुष्य की शताब्दी के वर्ष में 16 जनवरी 1998 को अक्षरधाम सिधारे....शुरुआत में धीरे-धीरे कोमा में सरक कर वे मानो अदृश्य हो गये और गांधीवादी आखिरी सितारा डूब गया....उनका पार्थिव शरीर अमदावाद में पुलिस स्टेडियम के पीछे साबरमती नदी के स्वच्छ किनारे के पास के विशाल मैदान में सम्पूर्ण धार्मिक विधि के साथ पंचतत्व में विलीन हो गया !

देशप्रेम की भावना से केन्द्र में गृहमंत्री के ओहदे पर लगातार रह कर उन्होंने जिस लगन से भारत की सेवा करी है, उसकी मिसाल शायद ही और मिल पाये। इसी की कद्र करते हुए पिछले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न के पदक से सुशोभित किया था। चौदह साल तक लगातार गृहमंत्री के पद का गौरव उन्होंने जिस ढंग से बढ़ाया, वह उन दिनों के अखबार पढ़ेंगे तो पता लगेगा कि रोज़ाना जो खबरें आती उसमें एक दिन भी खाली नहीं जाता कि जब अखबार में उनके द्वारा किए किसी कार्य की प्रशंसा ना हुई हो या उनकी तस्वीर ना आयी हो !

प. पू. योगीजी महाराज के शब्दों में सत्संग के तो वे आचार्य समान थे। प.पू. योगीजी महाराज के दर्शन के लिए वे जब भी आते, बापा उनके लिए अपने सम्मुख बड़ी गद्दी लगवाते व स्वयं भी सिर पर पाग पहन कर उन्हें सम्मान देते। प.पू. योगीजी महाराज की आज्ञा से उनका प.पू. काकाजी के साथ एक बड़े भाई का रिश्ता था। विमुख प्रकरण की किसी एक बात पर प.पू.गुरुजी के पूछने पर कि—प.पू. काकाजी के लिए आपने ऐसा क्यों किया? तब उन्होंने कहा था कि मुझे योगीजी महाराज की आज्ञा है कि हमेशा दादुभाई का पक्ष रखना। वैसे ही एक बार इनके कोई काम में अपना सहयोग देने की संतों को कुछ हिचक थी; तब प.पू. काकाजी ने भी संतों को स्पष्ट कह दिया था कि मैं नंदाजी को मना नहीं कर पाऊंगा; क्योंकि बापा की मुझे आज्ञा है कि नंदाजी के हर काम में सहयोग देना। यूं सत्संग से खूब जुड़े हुए थे वे। दिल्ली में आज जो सत्संग विकसित हुआ दिखाई पड़ता है, उसकी नींव में पू. नंदाजी एवं पू. चन्द्रभान शर्माजी हैं। संतों के लिए दिल्ली में रहने का जब कोई ठिकाना ही नहीं था, तब उन्होंने संतों को सामने से आग्रहपूर्वक बुला कर। P S R एवं भारत साधु समाज के मकान में रहने की सुविधा कर दी थी। उन दिनों गृहमंत्री के पद पर खूब व्यस्त होने के बावजूद, हर 8-10 दिन पर वे संतों से मिलने, सुविधा देखने—करने आते और पूजा का भी लाभ लेते। सत्संग के साथ इन्हें इतना अपनापन था कि संतों के विमुख प्रकरण से वे इतने चिन्तित एवं विचलित हुए थे कि इस घटना के पीछे का रहस्य समझने उन्होंने अपनी ऑल इन्डिया गवनर्स की मिटिंग पोस्टपॉन्ड करके प. पू. काकाजी तथा शर्माजी के साथ सिर्फ इसी हेतु समय निकाला था। इससे भी अधिक वे जब भी किसी संत की पहचान करवाते, तो कहते कि—फलांने आश्रम के फलांने संत हैं—फलांने मठाधीश हैं—फलांने पीठेश्वर हैं वगैरह-वगैरह......जबकि अपने सत्संग के संतों की पहचान करवाते तो कहते-**'ये हमारे संत हैं'**। ऐसे पू. नंदाजी देश की एवं सत्संग की सेवा करके अब ब्रह्मस्वरुप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज, गुरुवर्य योगीजी महाराज और गुरुहरि प.पू. काकाजी के पास ही तो जाकर महाराज व स्वामी के चरणों में स्थित हुए.....सो, बृहद् गुणातीत समाज की ओर से इस अवसर पर हम सभी के श्रद्धा के सुमन अर्पित.......

1948 में भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु के केन्द्र में बुलाने पर दिल्ली जाने से पहले ब्रह्मस्वरुप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद लेने जब पू. नंदाजी गये थे, तब ब्रह्मस्वरुप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज ने अपने और गुरुहरि योगीजी महाराज के बीच बिठा कर उन्हें अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जो मूर्ति भेंट दी थी, वो दिल्ली—कुरुक्षेत्र घूमती—फिरती आखिर दिल्ली मंदिर की प्रतिष्ठा विधि के समय दिल्ली मंदिर—अनिर्देश आ पहुँची.....वह अब हमेशा के लिए यहां पू. नंदाजी की स्मृति चिह्न् के रुप में बनी रहेगी !

✡✡✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 1.2.98	रविवार —	बसंत पंचमी, शिक्षापत्री जयंती ब्रह्मस्वरुप प.पू. शास्त्रीजी महाराज की प्राकट्य तिथि
(2)	दि. 3.2.98	मंगलवार —	ब्रह्मस्वरुप प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन, 'अनिर्देश' मंदिर के पाटोत्सव की पूजा सुबह 8.00—9.30
(3)	दि. 7.2.98	शनिवार —	जया एकादशी, व्रत
(4)	दि. 15.2.98	रविवार —	प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्म जयंती
(5)	दि. 23.2.98	सोमवार —	विजया एकादशी, व्रत
(6)	दि. 25.2.98	बुधवार —	महाशिवरात्रि, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India)
Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064

TO,